रासलीला

प्रेम का मण्डल

‘भागवतपुराण’ की एक कथा पर आधारित

भाग तीन :
भगवान अनेक हो जाते हैं

अब चन्द्रमा आकाश में और भी ऊपर आ गया था, और नदी पर प्रकाश का एक जगमगाता मार्ग आलोकित हो रहा था। मुदित हो, श्रीकृष्ण ने घूमकर चारों ओर देखा, सभी नक्षत्रों और लोक-लोकान्तरों को निहारा जहाँ देवी-देवता इस नृत्य को देखने के लिए एकत्रित हो गए थे और गन्धर्व उनकी बाँसुरी के सुर में सुर मिला रहे थे।

धरा पर गोपियाँ कुछ आड़े-तिरछे घेरों में उनके इर्द-गिर्द नृत्य कर रही थीं। कुछ बहुत उल्लसित होकर नृत्य कर रही थीं, कुछ सकुचाई हुई थीं, कुछ इठलाते हुए झूम रही थीं और कुछ शर्मीली थीं। कई कृष्ण के नज़दीक आकर नृत्य कर रही थीं, इस आशा से कि कृष्ण की एक नज़र उन पर पड़ जाए। कुछ को खुद पर सन्देह था, इसलिए वे अपने आपको थोड़ा पीछे ही रख रही थीं। भगवान कृष्ण ने हर किसी को करुणापूर्ण दृष्टि से देखा। उन्होंने अपनी मुरली की धुन तेज़ कर दी, और इसी के साथ गोपियाँ और भी तेज़ी-से नृत्य करने लगीं; जल्द ही वे नृत्य में तल्लीन हो गईं, कृष्ण के साथ होने के विशुद्ध आनन्द में डूब गईं। वे सभी कृष्ण के लिए लालायित ही थीं कि अचानक, वहाँ मात्र एक नहीं, बल्कि अनेकानेक कृष्ण हो गए—हर गोपी के साथ एक कृष्ण। गोपियाँ परमानन्द से भर उठीं! प्रेम और उल्लास से सराबोर, हरेक गोपी ने कृष्ण का आलिंगन कर लिया। हर एक को लगा कि कृष्ण बस उसके लिए ही हैं और अन्य सभी को छोड़कर कृष्ण ने उसी को चुना है! एक ने सोचा, “मेरी सुन्दरता के कारण ही कान्हा ने मुझे चुना है।” दूसरी ने सोचा, “कान्हा ने मुझे इसलिए चुना क्योंकि मैं इतना अच्छा नृत्य करती हूँ।” तीसरी ने सोचा, “वे हमेशा के लिए मेरे ही हैं!”

और जैसे-जैसे गर्व का व कृष्ण पर खुद के अधिकार का विचार एक के बाद एक उनके मन में आता गया, वह जादुई मस्ती भी कम होती गई और उनका संसार बदल गया। कृष्ण वहाँ से अदृश्य हो गए।

कुछ गोपियों ने पाया कि उन्होंने तो वृक्षों को पकड़ रखा है। कुछ ने तो खुद को ही अपनी बाहों में भर लिया था। सभी उदास होकर उलझन में पड़ गईं। अपने बिखरे बालों और वस्त्रों में वे यहाँ क्या कर रही थीं? वन भी, जो कुछ क्षण पूर्व इतना मनोरम और जादुई लग रहा था, अब सुनसान और बेरंग दिखने लगा। वृक्षों के बीच हवा का झोंका ऐसे बहा मानो निराशा की आह हो।

"वे कहाँ चले गए? कृष्ण कहाँ हैं?" एक रोने लगी।

"पल भर पहले ही वे मेरे साथ नृत्य कर रहे थे!" दूसरी ने कहा।

"हो ही नहीं सकता। वे तो मेरे साथ थे," तीसरी बोली।

"नहीं, नहीं! वे तो मेरे साथ थे!" एक अन्य गोपी ने कहा।

मैदान के दूर वाले कोने से एक दूसरी गोपी चिल्लाई, "वे इस ओर गए हैं। मैं उनके पदचिह्न देख सकती हूँ।"

उसने इशारा किया। हाँ, नदी के किनारे चाँदी-सी मख़मली रेत पर साथ-साथ चलते दो लोगों के पदचिह्न थे : एक बड़े चरणों के और एक छोटे।

"कोई उनके साथ गया है!"

"राधा! राधा कहाँ है?"

"हाँ, कहाँ है राधा?"

उन्होंने आस-पास देखा। वे कहीं दिखाई न दी, यद्यपि वे उन सभी के साथ ही नृत्य कर रही थीं।

और अब, कृष्ण को खोने के उनके दर्द में ईर्ष्या की गहरी चुभन भी जुड़ गई।

"चलो उनके पीछे चलें!"

और फिर उन्होंने ऐसा ही किया। वे सभी उस रेतीले मार्ग पर चलने लगीं जो नदी से दूर, वन में जा रहा था। फिर एक गोपी, जो सबसे आगे चलकर अन्य सभी का नेतृत्व कर रही थी, अचानक रुक गई और उसने हाथ का इशारा करके बाक़ी सबको अपनी गति धीमी करने के लिए कहा।

"देखो!" उसने कहा।

वे सब एकत्रित हो गईं। छोटे आकार के पदचिह्न ओझल हो गए थे और बड़े पदचिह्न और भी गहरे व स्पष्ट होते जा रहे थे।

“यहाँ से आगे कृष्ण ने उसे उठा लिया होगा!” नेतृत्व कर रही गोपी ने कहा।

व्याकुल होकर उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। अब तो यह और भी स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि कृष्ण ने अपनी वधू चुन ली है—और उनकी वधू उनमें से कोई भी नहीं थी।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।